केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वी जयंती मनाई गई।

आज संस्थान में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 25 सितंबर से 2 अक्टूबर तक आयोजित किया गया। 29 तारीख को इसी क्रम में स्वच्छता विषय पर एक पेटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 1 अक्टूबर को महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन पर तीन व्याख्यान हुए। इसी क्रम में आज तीन व्याख्यान व एक वैबीनार का आयोजन किया गया। आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहायक महा निदेशक डा. एस भास्कर,(सस्य विज्ञान कृषि वाणिकी, जलवायु परिवर्तन विभाग) रहे। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा जी ने की। सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. प्रबोधचन्द्र शर्मा ने मुख्य अतिथि डा. एस भास्कर, (सस्य विज्ञान कृषि वाणिकी, जलवायु परिवर्तन विभाग) का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा की महात्मा गांधी जी का जीवन एक आदर्श जीवन था। जोकि देश के लिए, निर्धन व समाज के दबे कुचले पीडीत और वंचित लोगों के उत्थान के लिए समर्पित था। महात्मा गाधी जी ने इन वर्गो के सुधार के लिए कई आदोलन चलाए। उन्होने असम से गुजरात व कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे देश के देहाती जीवन को जानने के लिए कई यात्राएं की। चम्पराण की घटना देखकर उनके मन को बहुत दुख हुआ और उन्होने प्रतिज्ञा की कि मैं पुरे जीवन वस्त्र नही पहनुगा। गांधी जी अहिंसा, स्वदेशी, जैविक खेती, आत्म निर्भर भारत नारी उत्थान के पक्षधर थे। उन्होने लाखों लोगों के मन को बदला इसलिए उन्हे महात्मा कहा जाता है।

डा. नीना शर्मा ने कहा की महात्मा गांधी जी वो युग पुरूष थे जो सारे विश्व के लोगों के दिलों में राज करते थे वो अपने आप में पुरा युग थे। उन्होने अपना सारा जीवन सत्य, अहिंसा, निर्बल व्यक्ति व नारियों के उत्थान में लगाया। उन्होने अहिंसा के द्वारा ही देश की स्वतंत्रता के आदोलन का सफल नेतृत्व किया। सत्य ग्रह उनका प्रमुख हथियार था।

डा. रेखा शर्मा ने कहा की आज महिला सशक्तिकरण की बहुत जरूरत है। आज नारी पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है व पुरूष के मुकाबले में किसी भी प्रकार कम नही है। आज नारियां सेना सहित हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है। स्त्री और पुरूष एक दुसरे के पुरक है प्रतिद्वंदी नही। महिला का आभुषण उसका आचरण है।

डा. एस.एम. मिश्रा ने कहा की आज भारत का विश्व में महात्मा गांधी जी के दिए गए सहयोग के कारण वर्चस्व है स्वदेशी का प्रचार करते हुए उन्होने चरखे से सूत कातने पर जोर दिया हमें उनके जीवन से सीख लेनी चाहिए। गांधी और गीता एक अभिन्न अंग है। उन्होने अपना जीवन एक तपस्वी की तरह जिया। 1920 से 1947 तक का काल महात्मा गांधी का युग कहा जाता है। उन्होने माई एक्सपेरिमेंटस विद टरूथ नामक विश्व प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। सत्य, अहिंसा, गीता उनके जीवन के आदर्श थे उन्होने सत्याग्रह किया

और अहिंसा आदोलन चलाया। भारत के 6 लाख 68 हजार का कार्यकल्प नितियों से हो सकता है। में उनको नमन करता हूँ।

इस वैबीनार में मुख्य संस्थान के साथ साथ तीनो केन्द्रो के अधिकारीयों/कर्मचारियों ने भी भाग लिया मचं संचालन डा. प्रवीन कुमार ने तथा धन्यवाद प्रस्ताव डा. अश्वनी कुमार ने प्रस्तुत किया